কৃষ্ণগুৰু

परमगुरु कृष्णगुरु प्रभुजी के वाणी

- हम सब जाति नहीं, बिरादरी नहीं, गोष्ठी नहीं, जड़ नहीं, हम सब मात्र कृष्ण दास आत्मा हैं ।
- किसी से विनिमय की अपेक्षा नहीं करना ।
- सेवा और निंदा मे ध्यान नहीं देना ।
- ग्राम्य बातों में ध्यान न देकर एकान्त मन से नाम जप करना ।
- भक्ति भाव दिखाकर स्वार्थ सिद्धि के लिये कोई द्रव्य देने पर ग्रहण नहीं करना ।
- स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी से दान नहीं लेना ।
- नित्य नैमित्तिक भक्ति कर्मों में विश्वास रखकर आत्मा सेवा करना ।
- मान-अपमान न देखकर ईश्वर भक्ति करना ।
- दुर्वाक्य ही पाप और पाप ही विघ्नि है ।
- कलुषित मन का कृष्ण नाम जप करके शुद्ध करना ।
- बुभुक्षु जन को घृणा न कर खाने को देना ।
- सुख-दुःख को त्यागकर लक्ष्य में उपनीत होना ।
- आत्म-प्रेम ही जगत में शान्ति का मूल है ।
- अन्न वस्त्र ईश्वर प्राप्ति का पथ नहीं है, भक्ति ही एक मात्र पथ है ।
- स्कूली शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करना ।
- आध्यात्मिक ज्ञान ही मनुष्य को संयमी और उम्र की वृद्धि कराता है ।
- आध्यात्मिक ज्ञान ही मनुष्य को एकात्मबोध कराता है ।
- एकात्मबोध ही जगत् में शान्ति का मूल है ।
- धर्म निन्दा, नाम निन्दा, भक्त निन्दा, असत्य प्रचार करने वाले वायु दूषित करते हैं। दूषित वायु लोक समाज में ब्याप्त होते हैं और व वायु सेवन करके मनुष्य ज्ञान रहित होकर जगत का क्षति साधन करते हैं । देश में विप्लव होते हैं । समाज में लोग कुकर्म में लिप्त होकर जगत में शान्ति भंग करते हैं । उन लोगों के प्रति मेरा आशीर्वाद है, ईश्वर उन लोगों को संमति प्रदान करें ।
- मिथ्या बोलना परिहार करें । मिथ्या चारिता ही आतंकवाद का मूल है।